Raga of the Month September 2023 Raga Shyamali राग श्यामली

राग "श्यामली" यह एक अप्रचलित राग है। "अभिनव गीत मंजरी" के तीसरे भागमे इस रागका संक्षिप्त वर्णन दिया हुआ है। कल्याण थाटसे उत्पन्न होनेवाला यह एक मनोरंजक राग स्वरूप है। इस रागका सृजन आचार्य श्रीकृष्ण नारायण रातंजनकरजीने किया है। इस रागमे गांधार और निषाद वर्जित है। इसकी जाती औडुव- औडुव है। उसका वादी षडज और संवादी पंचम है। यह राग रातके प्रथम प्रहरमे गाया जाता है।

बिलावल थाट जन्य दुर्गा रागका यह एक परिवर्तित स्वरूप है, जिसमें शुद्ध मध्यमके स्थानपर तीव्र मध्यमका प्रयोग किया जाता है। दुर्गा हिमालयकी पुत्री मानी गयी है। यह रागभी राग दुर्गाका परिवर्तित रूप होनेसे आचार्य रातंजनकरजीने इस रागका नामकरण "श्यामली" निश्चित किया।

इस रागकी निर्मितिके बारेमे एक योगयोगकी बात पंडित महालेजीने बतायी। १९७२ सालमे आचार्य रातंजनकरजी पंडित महालेजीके घर आये थे। तब किसी चर्चा करते समय आचार्य रातंजनकरजीके मनमे इस राग स्वरूपकी कल्पना आयी और कुछ विचारमंथनके बाद वह कल्पना राग श्यामलीके रूपमे साकार हुई।

आरोह अवरोह - सा, रे, मं, प, ध, सां । सां, ध, प, मं, रे, सा ।

किताबमे दिया हुआ स्वर विस्तार नीचे उद्धृत किया है।

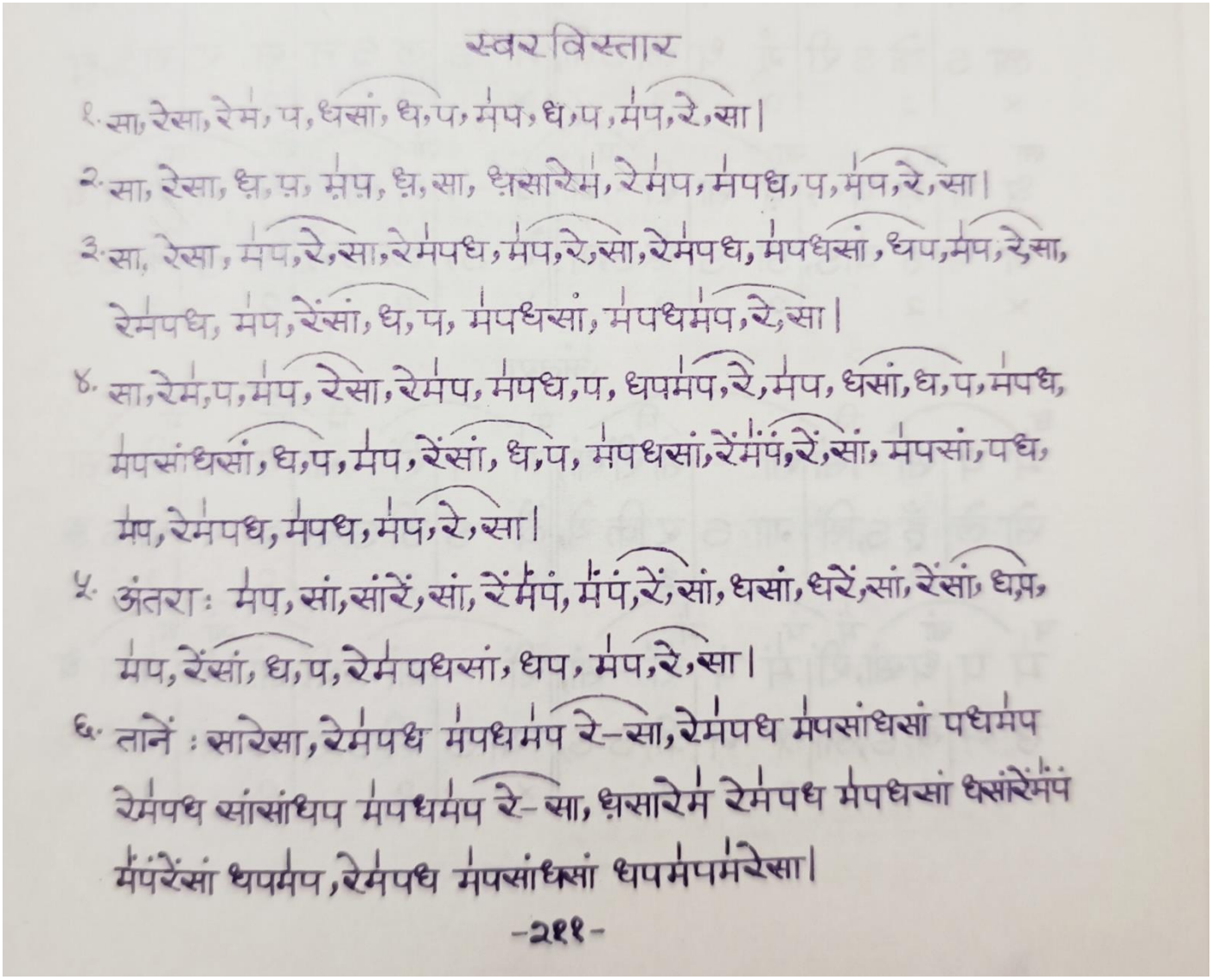

स्वर विस्तार

१. सा, रेसा, रेमं, प, धसां, ध, प, मंप, ध, प, मंप, रे, सा।

२. सा, रेसा, ध़, प़, मं़प़, ध़, सा, ध़सारेमं, रेमंप, मंपध, प, मंप, रे, सा।

३. सा, रेसा, मंप, रे, सा, रेमंपध, मंप, रे, सा, रेमंपध, मंपधसां, धप, मंप, रे, सा, रेमंपध, मंप, रेंसां, ध, प, मंपधसां, मंपधमंप, रे, सा।

४. सा, रेमं, प, मंप, रेसा, रेमंप, मंपध, प, धपमंप, रे, मंप, धसां, ध, प, मंपध, मंपसांधसां, ध, प, मंप, रेंसां, ध, प, मंपधसां, रेंमंपं, रें, सां, मंपसां, पध, मंप, रेमंपध, मंपध, मंप, रे, सा।

५. अंतरा : मंप, सां, सांरें, सां, रेंमंपं, मंपं, रें, सां, धसां, धरें, सां, रेंसां, धप, मंप, रेंसां, ध, प, रेमंपधसां, धप, मंप, रे, सा।

६. तानें : सारेसा, रेमंपध मंपधमंप रे-सा, रेमंपध मंपसांधसां पधमंप रेमंपध सांसांधप मंपधमंप रे-सा, ध़सारेमं रेमंपध मंपधसां धसांरेंमंपं मंपंरेंसां धपमंप, रेमंपध मंपसांधसां धपमंपमंरेसा।

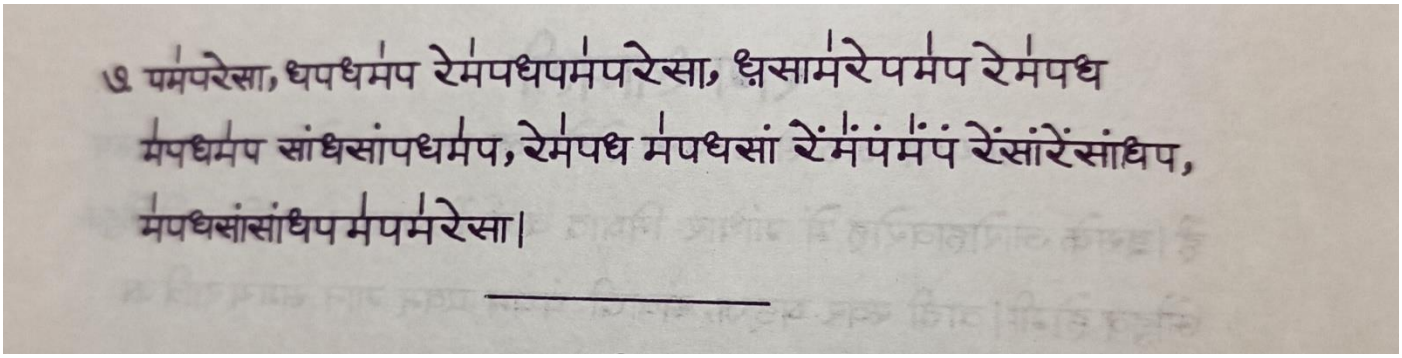

आजके ऑडियोमें हम आचार्य श्रीकृष्ण नारायण रातंजनकरजी रचित द्रुत रचना सुनेंगे, जो उनके शिष्य पंडित यशवंतबुवा महालेजीने गायी हुई है।

संदर्भ : "अभिनव गीत मंजरी" भाग ३.
आभार : पंडित यशवंतबुवा महाले.

१- ९ -२०२३

Link to the list of 150^{+} Raga of the month articles -

@ Archive of ROTM Articles - http://oceanofragas.com/Raga_Of_Month_Alphabetically.aspx